

# काशी तमिऴ सङ्गमम् तमिल शङ्गमम् 4.0



## Daily Bulletin दैनिक बुलेटिन

Vol. 1, Issue 6 | 7 December 2025





## विशेष भाषा-प्रशिक्षण सत्र में प्रतिभागियों ने सीखी तमिल

काशी तमिल संगमम् 4.0 के अंतर्गत आयोजित विशेष भाषा-प्रशिक्षण सत्र में सैनिटरी वर्कर्स, छात्रों और एनसीसी कैडेट्स को एफएलएन मॉडल आधारित तमिल शिक्षण प्रदान किया गया। 'तमिल करकलाम' थीम पर केंद्रित इस आयोजन का उद्देश्य प्रतिभागियों को तमिल भाषा की मूल अवधारणाओं से परिचित कराना तथा उन्हें दैनिक जीवन में प्रयुक्त होने वाले शब्दों और संवादों का व्यावहारिक ज्ञान उपलब्ध कराना था।

प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को अभिवादन, संख्याएँ, शरीर के अंग, सरल वाक्य निर्माण, दैनिक संवाद तथा तमिल लिपि की प्रारंभिक पहचान सिखाई गई। एफएलएन मॉडल के अनुरूप दृश्य-आधारित चार्ट, संवाद-अभ्यास और सरल शब्दावली का प्रयोग करते हुए सीखने की प्रक्रिया को और अधिक सहज, रोचक तथा प्रभावी बनाया गया।

इस सत्र में विभिन्न समूहों की आवश्यकताओं के अनुसार विशिष्ट

शिक्षण सामग्री भी प्रस्तुत की गई। सैनिटरी वर्कर्स को उनके कार्य से संबंधित तमिल शब्दावली और संवाद शैली का प्रशिक्षण दिया गया। छात्रों को पलैशकार्ड और संवाद आधारित गतिविधियों के माध्यम से भाषा की बुनियादी संरचना समझाई गई। वहीं एनसीसी कैडेट्स को कमांड, परेड और टीमवर्क से जुड़ी तमिल अभिव्यक्तियों का अभ्यास कराया गया, जिससे उनके अनुशासनात्मक प्रशिक्षण में नई भाषाई दक्षता का समावेश हो सका। काशी तमिल संगमम् का यह प्रयास न केवल भाषा शिक्षण को सरल और सुलभ बनाता है, बल्कि उत्तर और दक्षिण भारत के बीच सांस्कृतिक एवं भाषाई सेतु को भी मजबूत करता है। यह प्रशिक्षण 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की उस भावना को साकार करता है, जो विविध भाषाओं, संस्कृतियों और समुदायों को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करती है।

## नमो घाट पर बनारसी शिल्प में NIFT की बुनियादी समझ

नमो घाट पर आयोजित काशी-तमिल संगमम् 4.0 में कपड़ा मंत्रालय के अंतर्गत नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी (NIFT) वाराणसी लगाए गए स्टॉल 44 और 46 पर बनारस के विश्व-प्रसिद्ध शिल्प और हस्तकला का प्रदर्शन किया जा रहा है। यह प्रदर्शनी सुबह 11 बजे से रात 8 बजे तक सभी आगंतुकों के लिए खुली है।

निदेशक उज्ज्वल बनर्जी के मार्गदर्शन में NIFT का लक्ष्य है कि लोग ग्राफिक्स एवं फॉन्ट (बुनियादी) समझ प्राप्त करें। इसके लिए उन्होंने पोस्टर पर विभिन्न फॉन्ट में विचार लिखे हैं। यह पहल न केवल काशी की सांस्कृतिक निरंतरता और कारीगरों के महत्व को उजागर करती है, बल्कि युवाओं को ग्राफिक्स डिज़ाइनिंग जैसे रचनात्मक क्षेत्रों में भविष्य के करियर के अवसरों के लिए प्रेरित भी करती है। यह प्रदर्शनी उत्तर और दक्षिण भारत की साझा कलात्मक विरासत को मजबूत कर रही है।



## काशी-तमिल संगमम् 4.0 में चटाइयों की प्रदर्शनी

वाराणसी के नमो घाट पर आयोजित काशी तमिल संगमम् में स्टॉल नंबर 2 विशेष आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। यहां मास्टर क्राफ्टस्पर्सन मरियम देवी द्वारा बनाई गई तमिलनाडु की पारंपरिक पट्टामदाई चटाइयां प्रदर्शित की जा रही हैं। सदियों पुरानी यह कला तमिलनाडु की सांस्कृतिक पहचान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इन चटाइयों को थामिराबरानी नदी के किनारे उगने वाली कोरई घास से हाथ से बुना जाता है, जिससे इन्हें प्राकृतिक मजबूती और विशेष मुलायम बनावट मिलती है।

पर्यावरण के अनुकूल होने के कारण आज इन चटाइयों की मांग देश-विदेश में लगातार बढ़ रही है। परंपरागत कला और आधुनिक उपयोगिता के इस संगम ने युवाओं में भी इस हस्तकला के प्रति रुचि बढ़ाई है। काशी तमिल संगमम् का यह स्टॉल न सिर्फ कला प्रेमियों के लिए आकर्षण है बल्कि भारतीय हस्तकला के उज्ज्वल भविष्य की ओर संकेत भी करता है।





## KTS 4.0 Hindi - Tamil Translation Workshop - Highlights

National Book Trust, India continues its mission to enrich regional language publishing through a Hindi-Tamil Translation Workshop. The second day of the workshop marked a productive and insightful learning experience for the participating scholars.

The session was led by academican and Mentor Dr. Jayanthi Murali, who brought her expertise and literary acumen to the training. Throughout the day, scholars engaged in hands-on translation of the selected books. Each translation draft was thoroughly reviewed by the mentors, who provided constructive feedback on sentence structure, idiomatic correctness, contextual relevance, and stylistic refinement.

The mentors emphasized the significance of retaining the essence of the original text while ensuring that the translated version remains accessible and culturally resonant for Tamil readers. Guidance was also provided to improve linguistic clarity and

consistency.

Participants enthusiastically shared their experiences from previous KTS 3.0 workshop under this series. Many expressed how the initiative has enhanced their understanding of translation methodologies, broadened their literary perspectives, and helped them grow in confidence as translators.

The discussion also covered areas where scholars can further strengthen their skills, particularly in maintaining uniformity of tone, avoiding literal translation pitfalls, and developing better familiarity with technical terminology.

The day concluded with an open dialogue, and collaborative learning, reinforcing the workshop's objective of nurturing a new generation of skilled Tamil translators who can contribute meaningfully to Indian publishing. NBT-India remains committed to promoting multilingual literature and ensuring that knowledge transcends linguistic boundaries.



## नांदयाल, इंद्रप्रस्थ होटल में तमिल प्रतिनिधियों ने किया योग

काशी तमिल संगमम् 4.0 का सांस्कृतिक संदेश और 'एक भारतदृष्टेष्ट भारत' की भावना को आगे बढ़ाते हुए आज सुबह होटल इंद्रप्रस्थ, नांदयाल में योग सत्र का विशेष आयोजन किया गया। सुबह 7 बजे शुरू हुए इस सत्र में प्रतिभागियों ने पारंपरिक योगाभ्यास के माध्यम से तन-मन को संतुलित करने का प्रयास किया।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा, विशेषकर योग को समाज के अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाना तथा काशी और



तमिल संस्कृति के अद्भुत संगम को साधना था। आयोजन स्थल पर प्रतिभागियों ने सूर्य नमस्कार, प्राणायाम और ध्यान के साथ दिन की शुरुआत की।

कार्यक्रम में उपस्थित लोगों ने कहा कि काशी तमिल संगमम् 4.0 केवल सांस्कृतिक एकता का पर्व नहीं, बल्कि भारतीय परंपरा और आध्यात्मिक विरासत को पुनर्जीवित करने का माध्यम भी है। योग सत्र ने इस संदेश को और मजबूती से स्थापित किया।

## Writers' Delegation from Tamil Nadu gets Grand Traditional Welcome in Kashi

The arrival of distinguished visitors from different fields across South India continues in Varanasi to Kashi Tamil Sangamam 4.0, celebrating the deep-rooted cultural, educational, and spiritual ties between North and South India. The third delegation, comprising writers from Tamil Nadu, reached Varanasi on Saturday. The delegation received a grand traditional welcome at Banaras Railway Station with the rhythmic beats of Damru, a shower of flower petals, chants of 'Har Har Mahadev' and 'Vanakkam Kashi'. Minister of State for Uttar Pradesh, Shri Anil Rajbhar, along with senior administrative officials, were present during the welcome ceremony at the Banaras Railway station. The visiting writers were briefed by officials on Kashi's cultural heritage and the historical ties between Tamil Nadu and Varanasi. The Tamil delegation expressed great delight at the traditional welcome they received at the station. Many members shared that the warmth and spiritual atmosphere of Kashi left an unforgettable impression on them. As per the programme schedule, this delegation will visit the Shri Kashi Vishwanath Dham on Saturday. Their itinerary also includes a tour of the Ganga's sacred banks, the iconic Ghats, and the city's prominent cultural and educational landmarks. Members of the organising committee stated that a series of special programmes have been designed to share the information with guests about Kashi's heritage, art, culture, spirituality and the traditions that define the soul of the ancient city.



## एनएसएस और कॉलेज के छात्रों के साथ उप निदेशक द्वारा आंध्र प्रदेश सरकार की ओर से ऋषि अगस्त्य अभियान दल का किया स्वागत

पुथुर में आज एक विशेष और गौरवपूर्ण क्षण देखने को मिला, जब एनएसएस स्वयंसेवकों तथा स्थानीय कॉलेज के छात्रों ने पर्यटन एवं जिला प्रशासन के उप निदेशक के नेतृत्व में आंध्र प्रदेश सरकार की ओर से ऋषि अगस्त्य अभियान दल का गर्मजोशी से स्वागत किया। यह स्वागत केवल एक औपचारिक कार्यक्रम नहीं था, बल्कि हमारी सहस्राब्दियों पुरानी सांस्कृतिक विरासत, परंपरा और आदान-प्रदान की उस भावना का प्रतीक था, जिसे काशी तमिल संगमम् 4.0 नई ऊर्जा के साथ पुनर्जीवित कर रहा है। ऋषि अगस्त्य, जिन्हें उत्तर और दक्षिण भारतीय संस्कृति को जोड़ने वाला सेतु माना जाता है, उनके नाम पर चल रहा यह अभियान प्राचीन भारत की ज्ञान-धारा, लोककथाओं, भाषाई विरासत और आध्यात्मिक परंपरा को आधुनिक पीढ़ी तक पहुँचाने का एक प्रयास है।





## जनजातीय कला का उत्सव: काशी में प्रदर्शित हुई नीलगिरि की सदियों पुरानी टोडा कढ़ाई

काशी तमिल संगमम् 4.0 के तहत नमो घाट स्थित प्रदर्शनी में स्टॉल संख्या 44 पर नीलगिरि, तमिलनाडु से आई अनुराधा हालान और विनोधासिन द्वारा प्रस्तुत टोडा हैंड एम्ब्रॉयडरी ने आगंतुकों का विशेष ध्यान आकर्षित किया। टोडा जनजाति की यह पारंपरिक कढ़ाई कला पूरी तरह हस्तनिर्मित होती है और वर्ष 2013 में इसे भारत सरकार द्वारा भू-चिह्न (जीआई टैग) की मान्यता प्राप्त हुई। टोडा समुदाय लगभग 80-85 वर्षों से इस विरासत कला को संरक्षित कर रहा है, जबकि अनुराधा जी और विनोधासिन पिछले दो दशकों से इसके संरक्षण और प्रसार में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं।

टोडा कढ़ाई की शुरुआत 'पुथुकुली' नामक पारंपरिक वस्त्र से मानी जाती है, जिसे टोडा महिलाएँ स्वयं बुनती और विशिष्ट लाल-काले धागों से सजाती थीं। समय के साथ यह कला विकसित होकर शॉल, स्टोल, पर्स, पोटली बैग, टेबल क्लॉथ, किचन कवर, जैकेट, नैपकिन, नेकपीस, हेयरबैंड और पैचवर्क जैसे अनेक उत्पादों के रूप में लोकप्रिय हो चुकी है। यह कला न केवल सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक है बल्कि टोडा जनजाति की आजीविका का महत्वपूर्ण आधार भी है।

इन उत्पादों की बिक्री स्वयं सहायता समूहों, सहकारी समितियों और ऊटी हैंडलूम विभाग के माध्यम से की जाती है। ऊटी एक प्रमुख पर्यटन स्थल होने के कारण वहाँ पर्यटकों के बीच टोडा उत्पादों की मांग अत्यधिक रहती है। साथ ही कलाकार ग्राहकों की पसंद के अनुसार कस्टमाइज्ड उत्पाद भी तैयार करते हैं, जिससे इस कला का विस्तार और भी बढ़ा है।



## शिक्षा मंत्रालय की डिजिटल पहल का आकर्षक केंद्र एनबीटी स्टॉल

काशी तमिल संगमम् 4.0 में शिक्षा मंत्रालय का Government Funded National - Library अपने स्टॉल 19-23 के माध्यम से ज्ञान की नई डिजिटल धारा प्रवाहित कर रहा है। देश की पहली निःशुल्क डिजिटल मोबाइल लाइब्रेरी यहाँ आगंतुकों को यह अनुभव कराती है कि "Your Digital Library in Your Pocket" अब सिर्फ एक विचार नहीं, बल्कि वास्तविकता है।

हर दिन 12:15 PM पर आयोजित होने वाले विशेष ऑरिएंटेशन सत्र आगंतुकों को राष्ट्रीय ई-पुस्तकालय के सुगम उपयोग की कला सिखाते हैं, जहाँ हजारों पुस्तकों की दुनिया बस एक क्लिक दूर है।

प्रातः 11 बजे से रात 8 बजे तक खुला यह स्टॉल डिजिटल शिक्षा के भविष्य को साकार रूप में प्रस्तुत करता है—सुलभ, सरल और हर किसी के लिए।









## काशी तमिल संगमम् 4.0 : नमो घाट पर लोक-सांस्कृतिक रंगों की बह रही अनूठी छटा

काशी की पवित्र धरा आज एक बार फिर कला, संस्कृति और परंपरा के रंगों से सराबोर हो उठी। काशी तमिल संगमम् 4.0 के अंतर्गत नमो घाट पर आयोजित संध्या सांस्कृतिक समारोह ने गंगा तट को सुर, ताल और नृत्य की अनोखी लय से भर दिया। शाम 3 से 5 बजे तक चले इस कार्यक्रम ने उत्तर और दक्षिण की सांस्कृतिक विरासत को एक ही मंच पर पिरोकर अद्भुत सामंजस्य का निर्माण किया।

कार्यक्रम की शुरुआत वाराणसी के विष्णु यादव एंड ग्रुप द्वारा प्रस्तुत फोक सिंगिंग से हुई, जिसमें लोकधुनों की मिठास ने वातावरण को प्रफुल्लित कर दिया। इसके पश्चात शुभम मिश्रा एंड ग्रुप द्वारा प्रस्तुत भजन गायन ने गंगा तट पर भक्ति की तरंगें बिखेर दीं। श्रोताओं ने स्वरभक्ति के इस गरिमामय अनुभव को मंत्रमुग्ध होकर सुना। इसके

बाद उत्तर से दक्षिण की ओर यात्रा करते हुए मंच पर आए तमिलनाडु के रविचंद्रन एंड ग्रुप, जिन्होंने अपने ऊर्जावान तमिल फोक डांस से दर्शकों को रोमांचित कर दिया। पारंपरिक वेश-भूषा, तीव्र लय और अनूठी शैली ने पूरे वातावरण में दक्षिण भारत की सांस्कृतिक जीवंतता भर दी। वाराणसी की प्रसिद्ध कलाकार रंजना उपाध्याय एंड ग्रुप ने अपनी कथक प्रस्तुति में नृत्य की नफासत और अभिव्यक्ति की गहराई को बखूबी उकेरा। घूमरों की लय, पायल की झंकार और भाव-भंगिमाओं ने दर्शकों को क्लासिकल कला की दुनिया में रसविभोर कर दिया। समारोह का समापन पुनः रविचंद्रन एंड ग्रुप के दमदार तमिल फोक डांस से हुआ, जिसने कार्यक्रम को ऊँचाई और ऊर्जा से भरते हुए सांस्कृतिक एकता का सशक्त संदेश दिया।







### नमो घाट पर दो संस्कृतियों का भावपूर्ण मिलन

काशी तमिल संगमम के अंतर्गत नमो घाट दो संस्कृतियों के मिलन का साक्षी बना, जब तमिलनाडु से आए तीसरे बैच के प्रतिनिधियों का स्वागत आयोजकों द्वारा किया गया।